International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(1): 81-84
Received: 05-02-2023
Accepted: 10-03-2023

डॉ. पूर्णिमा मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

नेहिल नायक
शोधार्थी, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पूर्णिमा मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

जयपुर शहर में नगरीकरण का उसके अनुषंगी कस्बों की जनसंख्या एवं नियोजित क्षेत्रफल पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. पूर्णिमा मिश्रा, नेहिल नायक

सारांश
जयपुर शहर में नगरीकरण के कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि हुई है, बढ़ती हुई जनसंख्या को विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए भूमि की उपलब्धता आवश्यक होती है। शहर में सुविधाएं विकसित करने के साथ–साथ अनुषंगी कस्बों व ग्रोथ सेंटरों में भी गुणवत्तायुक्त सुविधाओं का विकास कर शहर से जनसंख्या दबाव कम किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। मास्टर प्लान में अनुषंगी नगरों के विकास के प्रस्तावों के फलस्वरूप इन नगरों के स्वरूप में विकासोन्मुख परिवर्तन आ रहा है। इससे पूर्व प्रस्तावित अनुषंगी नगर ग्रामीण परिवेष के रूप में परिलक्षित थे तथा इनमें अधिकतर केवल आसपास के ग्रामीण लोगों को सुविधा प्रदान करने के लिए सुविधा दुकानें, प्राथमिक स्कूल, पटवार घर एवं ग्रामीण कुटीर उद्योग ही स्थापित थे। जनसंख्या भी सामान्य गति से बढ़ रही थी। अधिकांश कार्यशील लोग मुख्य सड़क में नित्य श्रमिक के रूप में कार्य करने जाया करते थे, परन्तु इनको अनुषंगी नगर के रूप में पहचान मिलने के बाद इनमें विकास की नवीन लहर उत्पन्न हो गयी है। यहाँ पर अनेक औद्योगिक इकाईयाँ, राजकीय एवं वैयक्तिक संस्थान, यातायात एवं पेयजल, विद्युत आदि जन सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। इन प्रयासों के फलस्वरूप इनकी जनसंख्या, व्यावसायिक संरचना एवं जीवन शैली में बदलाव आ रहा है। अब इनके ग्रामीण स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है तथा नागरिक स्वरूप में विकास हो रहा है।

कूटशब्दः नगरीकरण, अनुषंगी नगर, विकासोन्मुख, व्यावसायिक संरचना

प्रस्तावना
जयपुर शहरी क्षेत्र पर आबादी का बोझ कम करने के लिए आसपास के बड़े कस्बों को छोटे शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिनमें 11 सैटेलाइट टाउन एवं 4 ग्रोथ सेंटर शामिल हैं। इनका उद्देश्य स्थानीय लोगों को जयपुर शहर में जाए बिना ही रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन एवं मार्केट जैसी सुविधाएं वहीं उपलब्ध हो सकें। मदर सिटी अर्थात् जयपुर शहर व अनुषंगी नगरों के बीच सार्वजनिक परिवहन को बेहतर करने से लोग मदर सिटी में रहने के बजाय काम खत्म करके वापस होमटाउन लौट सकते हैं, जिससे जयपुर शहर पर जनसंख्या दवाब कम होता है। अचरोल, बगरू, बस्सी, भानपुर कलां, चौमूं, जहोता, जमवारामगढ़, कालवाड़, कानोता, कूकस एवं वाटिका कुल 11 सैटेलाइट टाउन के रूप में विकसित किए जा रहे हैं, साथ ही बगवाड़ा, चौंप, पचार एवं शिवदासपुरा–चंदलाई 4 ग्रोथ सेंटर के रूप में विकसित किए जा रहे हैं।
इन सभी क्षेत्रों में भूमि उपयोग को आवासीय क्षेत्र, वाणिज्यिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र, मनोरंजक क्षेत्र, मिश्रित भूमि, पर्यटक सुविधा क्षेत्र एवं परिसंचरण क्षेत्र में विभक्त कर विकसित किया जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र
जयपुर शहर राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में अरावली पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है। यह शहर $26^0$46′ से $27^0$01′ उत्तरी अक्षांशों एवं $75^0$37′ से $76^0$57′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई समुद्र तल से 425 मीटर है। यह नगर रेल, सड़क, मेट्रो व वायुमार्गों से जुडा हुआ है। यह उत्तर पूर्व में दिल्ली से 308 किमी., पूर्व में आगरा से 242 किमी., पश्चिम में अजमेर से 136 किमी. तथा दक्षिण में कोटा 250 किमी. पर स्थित है। सड़क मार्ग में राष्ट्रीय राजमार्ग न. 48 दिल्ली–मुम्बई, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 21 आगरा–बीकानेर शहर से होकर गुजरते हैं। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय राजमार्ग न. 52 जयपुर–कोटा, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 248 जयपुर–चन्दवाजी को जोडते हैं।
जयपुर राजस्थान राज्य की राजधानी है। जयपुर नगर की स्थापना सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। यहाँ कोई बड़ी नदी प्रवाहित नहीं होती है। कई छोटे–बड़े नदी नाले प्रवाहित होते हैं।यहाँ की जलवायु अर्द्धशुष्क प्रकार की है तथा यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 560 मिलीमीटर होती है।

यहाँ अनुकूल जलवायु, समतल धरातल, उपजाऊ मृदा, रोजगार के साधन, शिक्षा के केन्द्र एवं अन्य सुविधाओं के कारण तीव्र नगरीकरण की प्रवृति पायी जाती है। इसके 11 अनुषंगी नगर एवं 4 ग्रोथ सेंटर विकसित किए जा रहे हैं।

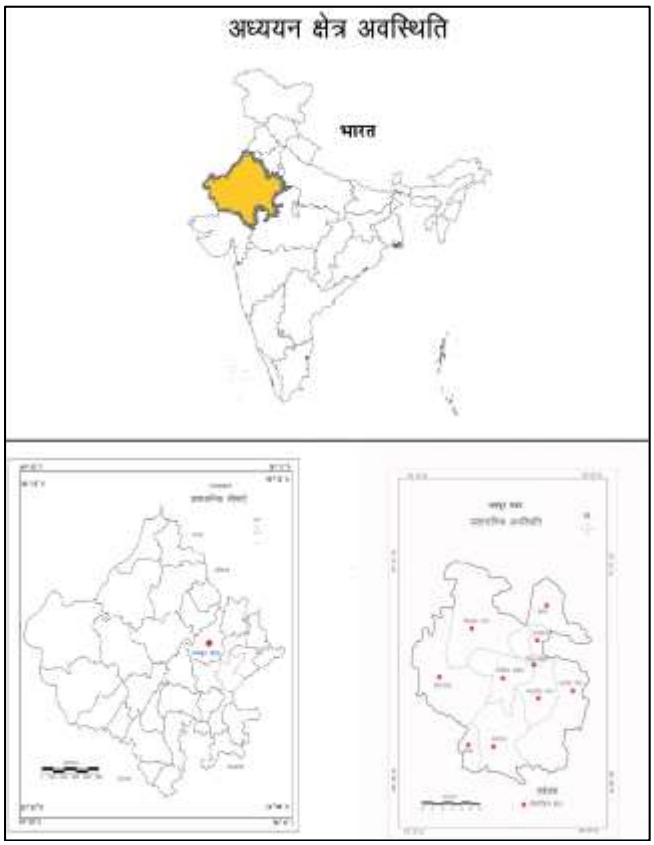

मानचित्र 1: जयपुर शहर की अवस्थिति

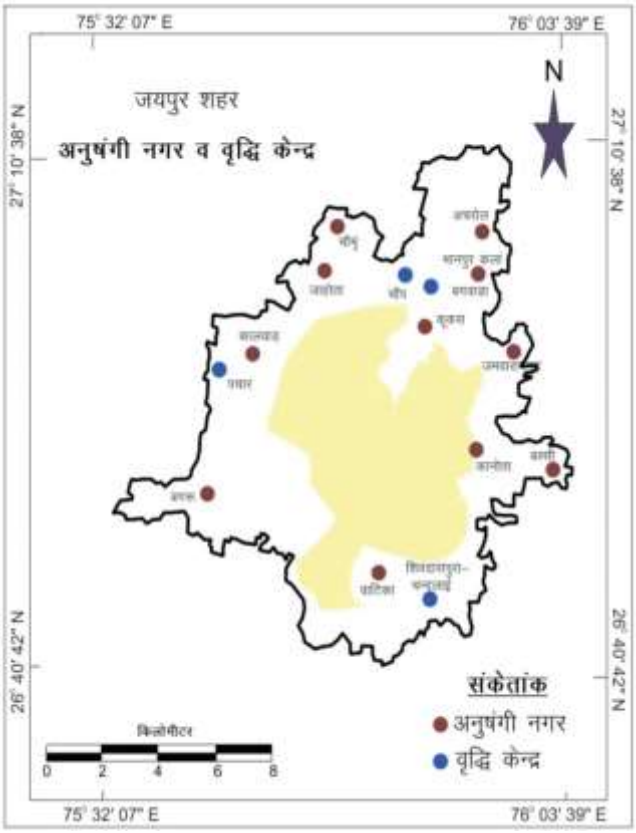

मानचित्र 2: जयपुर शहर के अनुषंगी नगर व वृद्धि केन्द्र

उद्देश्य

1. जयपुर शहर के अनुषंगी कस्बों की जनसंख्या की विशेषताओं की जानकारी एकत्रित करना।
2. जयपुर शहर के अनुषंगी कस्बों के नियोजित क्षेत्रफल की विशेषताओं की जानकारी एकत्रित करना।

परिकल्पना

1. विगत दशकों में जयपुर शहर में नगरीकरण के कारण अनुषंगी कस्बों की जनसंख्या एवं नियोजित क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोतः** इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्रोतः** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या वृद्धि

जयपुर शहर में तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं आप्रवास के कारण नगरीकरण की उच्च प्रवृति रही है। शहर में बढ़ते जनसंख्या दबाव की आवास, वाणिज्यिक, औद्योगिक, शिक्षा, रोजगार आदि सुविधाओं संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 11 अनुषंगी कस्बों व 4 ग्रोथ सेंटरों का विकास किया जा रहा है। जयपुर शहर के साथ–साथ इन अनुषंगी कस्बों व ग्रोथ सेंटरों की जनसंख्या भी तीव्र गति से बढ़ रही है, जिसके प्रमुख कारण जयपुर शहर के चारदिवारी क्षेत्र के लोगों निवासियों का खुले क्षेत्र में पलायन, निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का आप्रवास एवं औद्योगिक इकाईयों में कार्यरत मजदूर आदि हैं।

तालिका संख्या 1: जयपुर शहर के अनुषंगी नगर व वृद्धि केन्द्रों की जनसंख्या

क्र.सं.	अनुषंगी नगर	जनसंख्या वर्ष 2001	जनसंख्या वर्ष 2011	जनसंख्या वर्ष 2021	जनसंख्या वर्ष 2025
1	अचरोल	12796	17658	24369	28073
2	बगरू	26534	36061	47826	53342
3	बस्सी	19888	26252	35924	41241
4	भानपुर कलां	4370	5244	6555	7342
5	चौमू	72794	93941	119166	130855
6	जहोता	4996	6745	9105	10380
7	जमवारामगढ़	6638	8231	10207	11186
8	कालवाड़	6478	9525	13998	16798
9	कानोता	8838	9793	11158	11705
10	कूकस	2947	4244	6111	7186
11	वाटिका	8292	9237	10343	10785
12	बगवाड़ा	4190	5531	7301	8235
13	चौंप	4909	6799	9417	10867
14	पचार	4444	5777	7510	8411
15	शिवदासपुरा–चंदलाई	8837	9751	11028	11534

स्त्रोतः मास्टर प्लान 2009 एवं मास्टर प्लान 2025

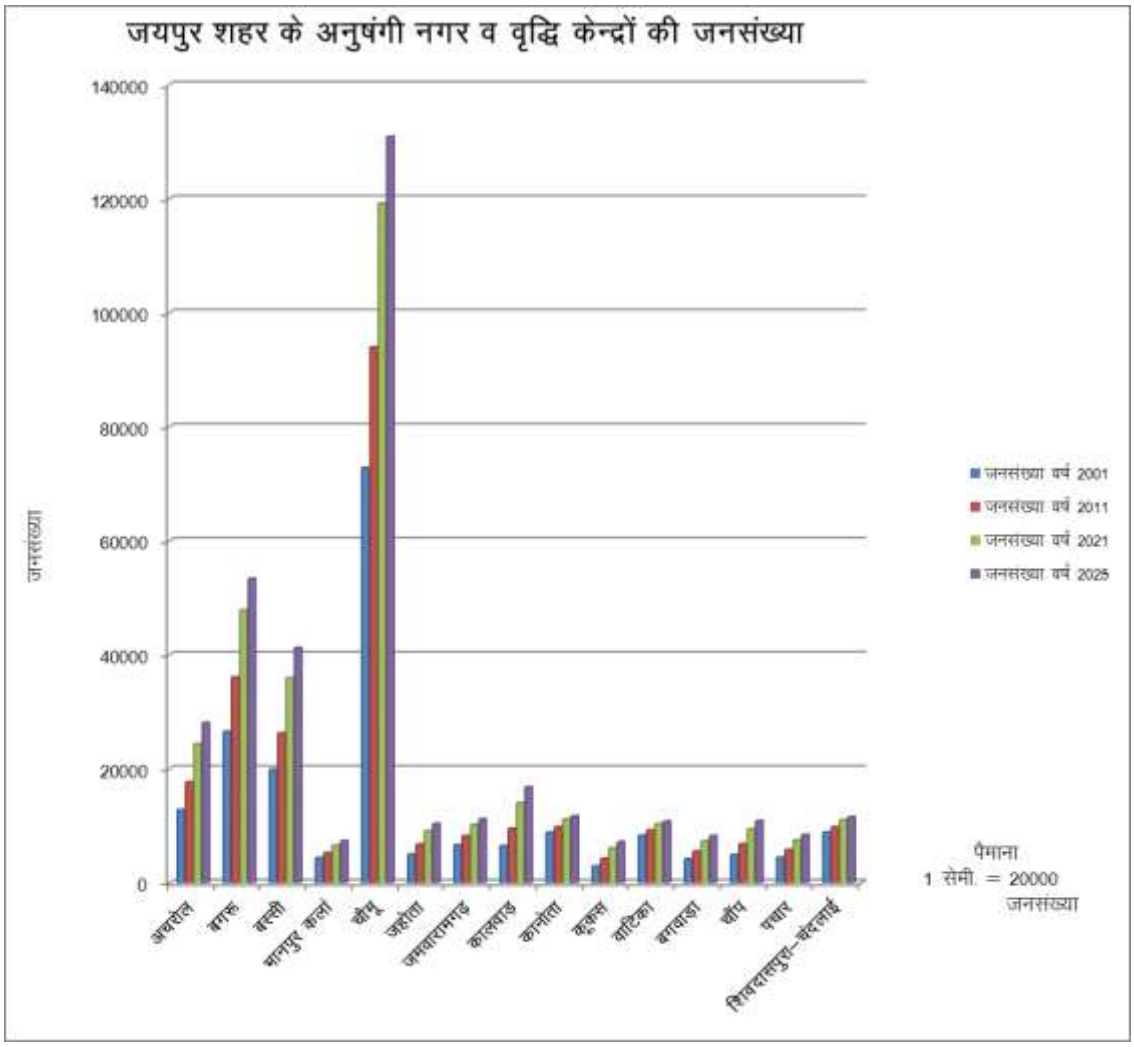

आरेख संख्या 1: अनुषंगी नगरों व वृद्धि केन्द्रों की जनसंख्या

जयपुर शहर के सभी अनुषंगी नगरों व वृद्धि केन्द्रों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। सर्वाधिक जनसंख्या चौमूं में 130855, उसके पश्चात् बगरू में 53342, बस्सी में 41241, अचरोल में 28073, कालवाड़ में 16798, कानोता में 11705, शिवदासपुरा–चंदलाई में 11534, जमवारामगढ़ में 11186 एवं चौंप में 10867 है। सबसे कम जनसंख्या कूकस में 7186 एवं भानपुर कलां में 7342 प्रस्तावित है।

नियोजित क्षेत्रफल में वृद्धि

जयपुर शहर में बढ़ते जनसंख्या दबाव की आवास, वाणिज्यिक, औद्योगिक, शिक्षा, रोजगार आदि सुविधाओं संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 11 अनुषंगी कस्बों व 4 ग्रोथ सेंटरों का विकास किया जा रहा है। इन अनुषंगी कस्बों में इन सुविधाओं के विकास के कारण नियोजित क्षेत्रफल में वृद्धि हो रही है।

तालिका संख्या 2: जयपुर शहर के अनुषंगी नगर व वृद्धि केन्द्रों का क्षेत्रफल

क्र.सं.	अनुषंगी नगर	क्षेत्रफल (है.) वर्ष 2009	क्षेत्रफल (है.) वर्ष 2025	क्षेत्रफल में वृद्धि (है.)
1	अचरोल	78.92	1134.72	1055.80
2	बगरू	806.26	3037.06	2230.80
3	बस्सी	305.72	1023.37	717.65
4	भानपुर कलां	31.21	77.67	46.46
5	चौमू	822.49	1474.75	652.26
6	जहोता	33.68	227.22	193.54
7	जमवारामगढ़	80.72	255.90	175.18
8	कालवाड़	57.87	256.21	198.34
9	कानोता	280.94	812.64	531.70
10	कूकस	117.69	539.40	421.71
11	वाटिका	53.21	192.27	139.06
12	बगवाड़ा	18.86	91.00	72.14
13	चौंप	39.78	525.21	485.43
14	पचार	24.96	117.68	92.72
15	शिवदासपुरा–चंदलाई	376.97	1599.79	1222.82

स्त्रोतः जयपुर मास्टर प्लान 2009 एवं मास्टर प्लान 2025

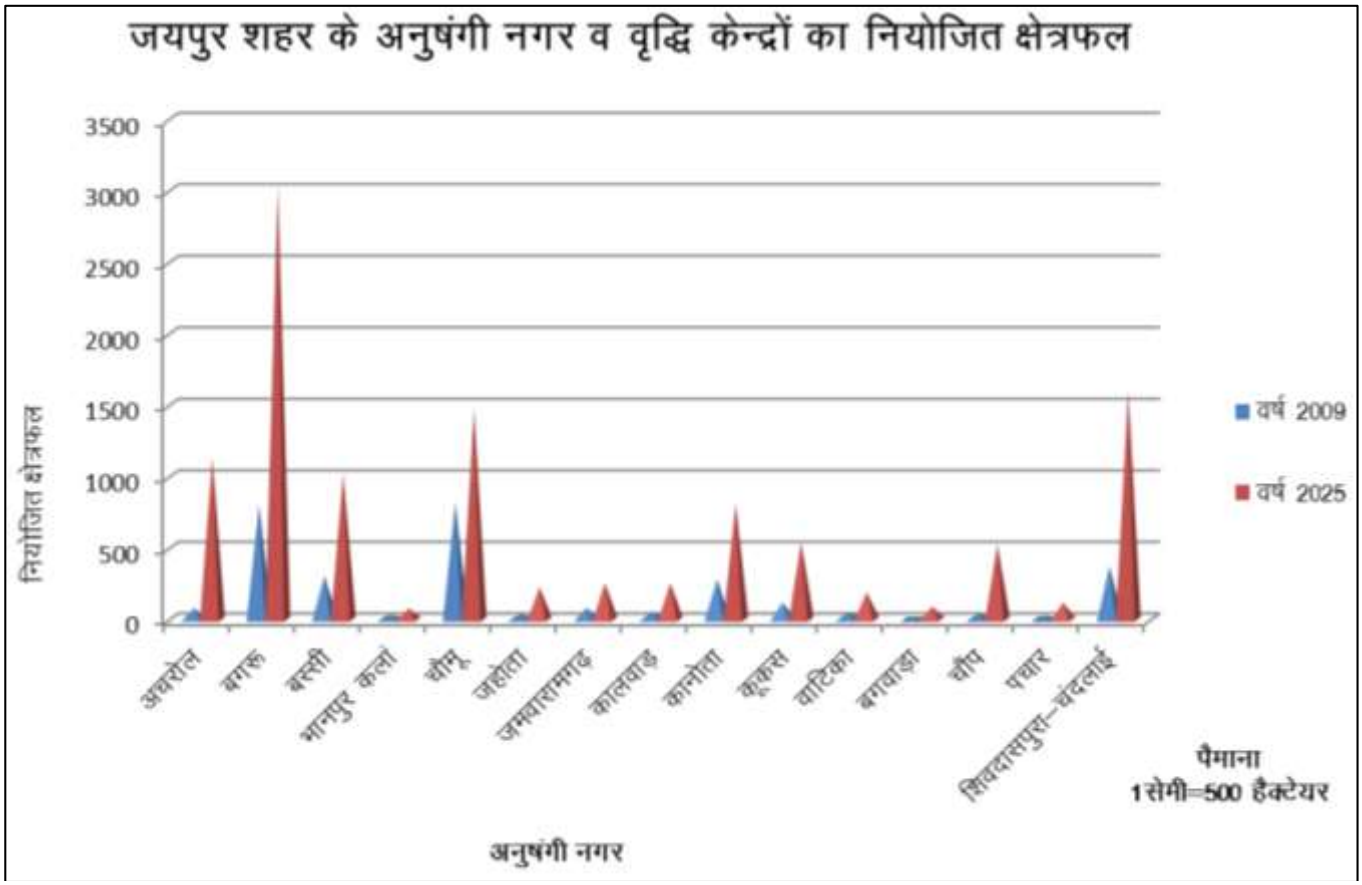

आरेख संख्या 2: अनुषंगी नगरों व वृद्धि केन्द्रों का नियोजित क्षेत्रफल

जयपुर शहर के सभी अनुषंगी नगरों व वृद्धि केन्द्रों के नियोजित क्षेत्रफल में वृद्धि की जा रही है। नियोजित क्षेत्रफल में सर्वाधिक वृद्धि बगरू में 2230.80 हैक्टेयर, उसके पश्चात् शिवदासपुरा–चंदलाई में 1222.82 हैक्टेयर, अचरोल में 1055.80 हैक्टेयर, बस्सी में 717.65 हैक्टेयर, चौमूं में 652.26 हैक्टेयर, कानोता में 531.70 हैक्टेयर, चौप में 485.43 हैक्टेयर एवं कूकस में 421.71 हैक्टेयर हुई है। सबसे कम वृद्धि भानपुर कलां में 46. 46 हैक्टेयर एवं बगवाड़ा में 72.14 हैक्टेयर हुई है।

निष्कर्ष

विगत दशकों में जयपुर शहर में नगरीकरण के कारण अनुषंगी कस्बों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है एवं लोगों को आवास, वाणिज्यिक, औद्योगिक, शिक्षा, रोजगार तथा अन्य जनसुविधाऐं उपलब्ध करवाने के लिए नियोजित क्षेत्रफल में भी लगातार वृद्धि हुई है।

सन्दर्भ

1. बंसल, सुरेश चन्द्र (2023), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृ.सं. 84–93
2. सक्सेना, एच.एम. (2022), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 56–61
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2021, जयपुर जिला, पृ.सं. 23–43
4. प्रशासनिक प्रगति प्रतिवेदन 2021, जयपुर जिला पृ.सं. 35–48
5. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन, प्रयागराज, पृ.सं. 51–54
6. जोशी, रतन (2020), नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 63–68